# कुमार जीवन - 24

**अव्यक्त बापदादा :-**

➳ _ ➳ **(2)** कुमार सदा अपने को बाप के साथ समझते हो? बाप और मैं सदा साथ-साथ हैं, ऐसे सदा के साथी बने हो? वैसे भी जीवन में सदा कोई न कोई साथी बनाते हैं। तो आपके जीवन का साथी कौन? (बाप) ऐसा सच्चा साथी कभी भी मिल नहीं सकता। कितना भी प्यारा साथी हो लेकिन देहधारी साथी सदा का साथ नहीं निभा सकते और यह रूहानी सच्चा साथी सदा साथ निभाने वाला है। तो **कुमार अकेले हो या कम्बाइन्ड हो? (कम्बाइन्ड) फिर और किसको साथी बनाने का संकल्प तो नहीं आता है? कभी कोई मुश्किलात आये, बीमारी आये, खाना बनाने की मुश्किल हो तो साथी बनाने का संकल्प आयेगा या नहीं? कभी भी ऐसा संकल्प आये तो इसे 'व्यर्थ संकल्प' समझ सदा के लिए सेकण्ड में समाप्त कर लेना। क्योंकि जिसे आज साथी समझकर साथी बनायेंगे कल उसका क्या भरोसा! इसलिए विनाशी साथी बनाने से फायदा ही क्या! तो सदा कम्बाइन्ड समझने से और संकल्प समाप्त हो जायेंगे क्योंकि सर्वशक्तिवान साथी है।** जैसे सूर्य के आगे अंधकार ठहर नहीं सकता वैसे सर्वशक्तिवान के आगे माया ठहर नहीं सकती। तो सब मायाजीत हो जायेंगे। **(08-04-1982)**

---

➢➢ व्यर्थ संकल्प से मुक्त कैसे बनें ?

➳ _ ➳ **संकल्प आया और गया**

→ **जैस पर्दे पर सीन दिख रहा है**

→ जैसे आकश में तारे दिख रहे हैं

➳ _ ➳ स्वयं को उन संकल्पों से अलग कर लेना है

→ व्यर्थ संकल्पों के साथ खुद को Identify नहीं करना है

→ उन संकल्पों से खुद को Detach कर लेना है

- यह संकल्प मेरा नहीं है
  - उन संकल्पों का नाश कर देना है

➳ _ ➳ यह क्रोध मेरा नहीं है

→ "मुझे क्रोध आया" - ये गलत है

→ "मुझ पर क्रोध आया" - यह सही है

➳ _ ➳ साक्षी हो कर उस संकल्प को देखना है

→ उस संकल्प को जाते हुए देखना है

➳ _ ➳ स्वयं को शुद्ध संकल्पों से घेर लेना

→ खुद के रचे हुए एक **Positive Zone** में चले जाएँ

→ मैं आत्मा अपनी आनंद स्वरुप स्थिति में स्थित हूँ ... बाकी सब व्यर्थ संकल्पों से अलग...

■ अगर हमें अपनी दिनचर्या में आनंद मयी स्थिति का अनुभव नहीं हो रहा है तो जरूर हम किसी सूक्षम बीमारी से ग्रसित हैं

▶ उस बीमारी को ढूंढो और उसका इलाज करो

---

➢➢ देहधारियों को आधार बनाएं ?

➳ _ ➳ इस दुनिया में ऐसा कोई देहधारी नहीं ... जिसकी आप गारंटी ले सकें की यह आपको कभी धोखा नहीं देगा

→ इस संसार के किसी व्यक्ति पर भरोसा करना स्वयं को खतरे में डालने के बराबर है

■ किसी देहधारी पर भरोसा करने पर अंत में पश्चाताप होता ही है

---